वैदेही

मैथिली महिनवारी

अगस्त
१९७२

वैदेही वैदेही वैदेही वैदेही वैदेही वैदेही वैदेही वैदेही वैदेही

मैथिल
बनाम
अमैथिल

सम्पादकीय

"मैथिल के ? जे मिथिलामे बसैत छथि तथा (अथवा) मैथिलीभाषा बाजैत छथि।" एकर अलावा कोनोतरहक गप्प हीनभावना, अज्ञान अथवा कूटचालिटाक द्योतक।

कहल जाइछ, मैथिल ब्राह्मण ओ कायस्थटा मैथिल छथि ! तखन सुनैत औ अपनेलोकनि ! ई दुनू जाति मिथिलामे बाहरसँ एलाह। एकटाक पोथी पतरा आर दोसरक हाथमे कागत-कलम। स्वदेशें पुजाबथि राजा विद्वान सभठाम पुजाबथि। हिनकालोकनि एहूदेशमे पूजनीय कार्य कयलनि। हरसिंहदेव एकटा बही बनौलनि आर हिनकालोकनिक पंजीकरण भेल। र राजा इएह करइए। बाहरसँ आयल तथा बुद्धिजीवीक उप्पर नियंत्रण आवश्यक। तजि की ई दुनू जाति मिथिलाक सांस्कृतिक प्रवाहसँ फराक भऽ गेलाह ? नहि। उनटे भेल। एहिठामक रंगमे ततेक ने रंगि गेलाह जे अपन पूर्वकस्थान सौराष्ट्रे (ब्राह्मण) वा कर्णाटके (कायस्थ) मे परिचितिलेल गर्वसँ मैथिल कहैलाह। मिथिलादेशक प्रति हिनक प्रेमक प्रति समस्त मैथिलीभाषीकेँ कृतज्ञ हेवाक चाही। कारण, हिनका दुनूकेँ छोड़ि आनगोटे आदिवासी मैथिल छथि। तखन अपनाकेँ अमैथिल बूझब की कहल जाएत ? कनेक विचारू त' ! अहाँ सभ गोटे मैथिल छी। एतय केसभ कतयसँ आयल छी, के कहत ? रक्त-माँसुक बनल प्राणी त' जिनिस नहि होइछ।

एकटा महासभा अछि मैथिल-महासभा। जाहिमे मात्र ब्राह्मण ओ कायस्थ प्रवेश पाबि सकैत छथि। एकरो अंदर उपरके बात अछि, जेना बिहारक बंगाली समाज, गुजराती समाज, पंजाबी-बिरादरी, आदि। अंतर एतबे जे बंगाली, गुजराती, पंजाबी आदि एखन पूर्ण बिहारी वा मैथिल नहि भऽ सकलाह अछि। मुदा ब्राह्मण आर कायस्थक संग एहेन बात नहि। तजि, हे अज्ञान-सारथी लोकनि ! कोनो मैथिल-संगठनक प्रवेशद्वार समस्त मैथिललेल खोलिकऽ राखू। हीनभावना (घुमाकऽ उच्चभावना) त्यागू। अहाँ एकसरे नहि छी। मैथिल यादव, मैथिल राजपूत मैथिल भूमिहार, मैथिल मुसलमान, मैथिल चमार सभक्यो अहाँक सेवाकलेल कृतज्ञ छथि, कृतघ्न नहि ! मानू त' सभगोटे मात्र मैथिल छी। जाति त' पानिक देबाल अछि, जे राजनीति, पैरबी आर दहेजवेरटामे काज दैछ।

तजि अमैथिल वैह छथि जे मिथिला ओ मैथिलीक एकतामे विभिन्नताक तत्त्वदर्शी छथि।

बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालय हेतु स्वीकृत

एक प्रति : ०.४०
विशेषांक : ०.७५
वार्षिक : ४.००
आजीवन : ५१.००
संरक्षण : १२५.००
डाक व्यय : निःशुल्क

वै दे ही

मैथिली महिनवारी
प्रकाशनक तेइसम वर्ष
संस्थापन-प्रेरणा : इन्द्रकान्तमिश्र [कुमार]
श्रीकृष्णकान्तमिश्र द्वारा मिथिला प्रेस द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित

सम्पादक
श्रीकृष्णकान्तमिश्र

अतिथि सम्पादक
श्रीसोमदेव

अगस्त १९७१

प्राप्ति स्रोत
वैदेही समिति
दरभंगा

एहि अंकमे

सम्पादकीय २
पत्र ओ प्रतिक्रिया
समाद ओ सूचना २६
शब्दसाधना २६४

कथा
जीवितछाया / श्रीभुवनेश्वरपाथेय २६५

कवितासमवेत
मनकबात / श्रीआरसीप्रसादसिंह २६९
आइ प्रसंग महाभारत अछि / श्रीबैजूमिश्र २७१
खैयामक एकटा रुबाइ / डॉ० श्रीहरिश्चन्द्र २७१
नरमेध / श्रीनिम्बार्क २७२
हम बनय चाहैत छी मनुक्ख / श्रीउदयचन्द्रझा विनोद २७३

पोथीप्रसंग
इन्डियाकेफेमे, नाचू हे पृथ्वी / श्रीवीरेन्द्रमल्लिक २७५

जुलाइ '७१ सँ चालू धारावाही उपन्यास
एकटा अर्द्धनारी / श्रीशौकतखलील २८०

पत्र ओ प्रतिक्रिया

राजकमल-किसुनअंक

आब तऽ वैदेहीक अहाँ कलेवरे बदलि देलिऐक अछि। आब बुझाइत अछि जे वैदेही मैथिलीक स्वस्थ पत्रिका अछि। थोड़ेदिन पहिने ई हलुमान-चलीसामे परिवर्त्तित भऽ गेल छेल। 'राजकमल-किसुन-अंक' देखलहुँ। सम्पा-[illegible]ी बड़ु भावुकतामे लिखल गेल छल तैं ओहिसँ निराशा झलकैत छल। अहाँक [illegible]क अंशक बीचमे राजकमलजीक लिखल कविता 'हमसभ बड़ु अल्पवयस छी' [illegible]नीक लागल। आर रचनासभ नीक लागल परंच श्रीरमानन्दरेणु की [illegible] रहऽ चाहैत छथि से हमरा जनिते अस्पष्ट रहि गेलनि अछि।

—पूर्णेन्दुकुमारचौधरी, अलंकार, घोघरडीहा, दरभंगा

वैदेहीक नियमित प्रकाशनसँ प्रसन्नता भेल अछि। वस्तुतः वैदेहीक आकर्षण बढ़ि गेलैक अछि। कोनो परिवर्त्तन नीके लगैत छैक। जूनक वैदेही पढ़लहुँ। राजकमल-किसुन-अंक जखन हाथमे आयल, एक एककऽ सभटा रचना पढ़ने विना वैदेही रखबाक इच्छा नहि भेल अछि। एहिमे आरो विविधता आनल जाय। आरो नव-नव प्रतिभाक रचना सम्मिलित कयल जाय। साहित्यक सभविधापर रचनाक समावेश पाठकक रुचिकेँ बढ़बैत छैक। किसुनजीक पत्रक अंश एवं राजकमलजीक पत्रक अंश वैदेहीक अंककेँ बड़ बेसी आकर्षक बना देलकैक अछि।

—प्रो० शिवशंकरमिश्र, मैकेनिकलइंजीनियरींगविभाग, आर० आइ० टी०, जमशेदपुर

वैदेहीक राजकमल-किसुनअंक भेटल। विलक्षण, तेज आओर उपादेय खासकऽ एहि बेरुका सम्पादकीय अद्भुत, मने जेना समसामयिकताक एकटा शब्द-मंजूषा! बधाइ!! अपनेक नाम पठाओल गेल राजकमलक पत्रसभ किछु एहन अप्रकाशित तथ्यसभक उद्घाटन करैछ जे राजकमल-साहित्यक शोधकर्त्ताकिलेल

विचारणीय एवं संग्रहणीय प्रमाणित होएत—से विश्वास। वैदेहीक ई अंक एकटा पैघ उपलब्धि। देखैत छी जे राजकमल आ किसुनजीक बाद आब अपने-लोकनि १५ जून सँ १९ जूनक रिक्तस्थानक पूर्ति करबाक ओरिआनमे लागल छी, मरबाक क्यूमे लाइन लगौने ठाढ़ छी। मुदा भाइ, हम नइँ मरब। किन्नहु नइँ मरब एखन—'अपहत मऽरे ने, छुतहर फूटेने'।

—वीरेन्द्रमल्लिक, १९/२ ए बैकुंठ घोष रोड, बालीगंज, कलकत्ता

वैदेहीक काया

वैदेहीक नवकायाकल्प देखिकए परम प्रमुदित छी। जहियासँ श्रीसोमदेवजी एहि अतिथि सम्पादकत्व स्वीकार कएल अछि, तहियासँ एहिमे प्रकाशित विषयक भाव, भाषा, कथा, कविता, व्यंग्यचित्र, साहित्य समीक्षामे सर्वत्र नूतनता व्यापकता परिलक्षित होइछ। वैदेहीक मैथिली-साहित्यक विकासमे अपूर्व य दान अछि—जकर एकमात्र श्रेय प्रो० श्री कृष्णकान्तमिश्रजीकेँ छैन्हि। मा अंकमे प्रकाशित डा० श्री सुधाकान्तमिश्रजीक "मैथिलीक बालसाहित्य" पर वार्त्ता तथा श्रीगिरिधरगोपालक "मक्खन" शीर्षक व्यंग्यचित्र यथार्थ ओ बड़ बिलक्षण अछि। अन्य प्रतिभावान साहित्यकारलोकनिक रचनासभसँ सेहो प्रभावित छी। एतादृशे समाद ओ सूचना एवं पत्र ओ प्रतिक्रिया प्रकाशित कएल जाए। कारण जे जीवित पत्र-पत्रिकाक इहो एकटा वैशिष्ट मानल जाइत छैक। वैदेहीक स्टैण्डर्ड (स्तर) एहिना विकासोन्मुख रहए, इएह हमर कामना।

—प्रो० डा० श्रीपरमेश्वरमिश्र, एम.ए., बी.एल., पीएच डी., अध्यक्ष. मैथिलीविभाग
जगदीशनन्दनमहाविद्यालय, मधुबनी

वैदेही नियमित रूपसँ भेटि रहल अछि। नव परिवेश आ नव काया-कल्पमे वैदेही खूब सोहनगर लगैत छथि। नव आ पुरान दुनू पीढ़ीक प्रतिनिधित्व करैत छथि वैदेही। मैथिली विकासक हेतु आन्दोलनक विवेचन सम्पादकीय वा विशिष्ट लेखकक लेखक माध्यमसँ हो, से हमर आग्रह। ....ओ दिन कहिया आयत जहिया मैथिली संविधानमे समादृत हएतीह। तस्मात सामूहिक प्रयास अपेक्षित।

—यदुवीरझा, वेराकोलियरी, धनबाद

साहित्य-अकादमी

वैदेही (मइ'७१) मे श्रीराजमोहनझाक साहित्य अकादमीक सन्दर्भमे मैथिली विषयक विशेष निबंध पढ़ल। सत् पूछी तऽ ई निबंध नहि, कोड़ा थिक—मैथिलिक प्रेमीक पीठपर जे ई कहैत नहि लजाइत छथि जे ओ मातृभाषाक अस्तित्व-रक्षाक हेतु सजग छथि। साहित्य अकादमीमे मैथिलीकें स्थान भेटनाइ हर्ष एवं गौरवक विषय अछि, मुदा एहि निबन्धसँ लगैत अछि जे ई स्थान मात्र कागज पर छैक। अकादमी हमरा समक संग अन्याय करैत अछि। परंच आश्चर्य भेइछ जे एहि स्थिति सँ अखनधरि हमरालोकनिकें अवगत किएक ने कराओल गेलि—हमरा जनैत ई अपराध अछि। की एकरे कहैत छैक मातृभाषा-सेवा ? राजमोहनजीक निबंध एहिपर सोचबाकलेल बाध्य कऽ दैत अछि जे मैथिलीक उपेक्षा आखिर राइ के—हिन्दीवला, सरकार अथवा हमसभ स्वयं ? अकादमी मैथिलीक उपेक्षा बराबर करैत अछि, हमर प्रतिनिधि एहि तथ्यकें कोठीमे मूनि राक्षसकें नोतैत छथि, हमसभ की करैत छी ? किनसाइत हमसभ बखाइत छी, डराइत छी किछु लिखबा बजबासँ। परिणाम सोझाँमे अछि। की हमसभ आबहु नहि चेतब ? ई बात नहि छैक जे मैथिली बजनिहारमे एक्कोगोटे इमानदार नहि छथि। हुनकासँ काज लेल जाय, हुनकापर ध्यान राखल जाय जे ओ की करैत छथि।

—मोहनभारद्वाज, राजराजेश्वरीभवन, बूढ़ानाथ, भागलपुर—१

"साहित्य अकादमी, मैथिलीक सन्दर्भमे" एकटा नीक लेख मानल जा सकैछ। एकरा अकादमी- इन्फारमेशन-ब्यूरो कहि सकैत छियैक।

—उपेन्द्रदोषी, नवतुरियामंडल, अपरबजार, राँची

(पृष्ठ २६३ केर बाँचल)

श्रीलक्ष्मीनारायणखर्गा अपन दुगार जनौलनि जे पुस्तकालय केर सभाभवन निकटभविष्यमे तइयार भऽ जाएत। नगरक एकमात्र एहि केन्द्रस्थलीय सभाभवनकेर निर्माणमे देरी जनतालेल असह्य भऽ रहल अछि, से जानलगेल। एहि अवसरपर प्रमुखवक्ता ओ कवि छलाह सर्वश्रीमहेशशर्मा, टी०पी०सिन्हा, श्रीनारायणदास (भू०पू०संसद्सदस्य), विद्युतप्रकाशदे, गोविन्दचौधरी, चन्द्रनाथमिश्रअमर, उपेन्द्रविद्यालंकार, अरुणठाकुर, जीवकान्त एवं सोमदेव। एहि समारोहक सफलताक श्रेय एहि पुस्तकालयक दबीचि श्रीसूरतलालकें छन्हि।

यात्रीजी मास्को में

नवदिल्ली, २४-७-'७१। श्रीयात्री (नागार्जुन) केर पत्र भेटल अछि—कालिह मास्को जा रहल छी। १० अगस्तधरि आपस आबि जाएब। विस्तारपूर्वक लिखबाक इच्छा छल। आब त' घूरियेकऽ लिखि सकब।

श्रीयात्रीजी मैथिली-साहित्यकारक रूपमे तथा दूगोट आनभाषाक प्रतिनिधि भारतसरकारदिससँ रूस आर पूर्वी यूरोपीय देशक सद्भावना-यात्रा करत विशेषतः बंगलादेशक संदर्भमे। शांतिकपोतक ई हंस-यात्रा सुफल हो।

मैथिली साहित्य संस्थान

मैथिली-साहित्य-संस्थान, पटनाक वार्षिक अधिवेशन, दिनांक ८ अगस्त १ कें ५ बजे संध्याकाल बिहाररिसर्चसोसाइटीभवन (पटना संग्रहालय) बिहारक राज्यपाल श्रीदेवकान्तबरुआक अध्यक्षतामे होयत। एहि अवसरपर संस्थानक अध्यक्षद्वारा प०श्रीसीतारामझा एवं पं०श्रीवेदानन्दझाकें क्रमशः मैथिलीरत्न एवं मैथिलीभूषणक उपाधि, डॉ॰ श्रीमतीअणिमासिंहकें उपेन्द्राचार्य स्वर्णपदक तथा पं०श्रीगोविन्दझाकें अभ्यर्थनापत्र प्रदान करबाक प्रसंगक विवेचन एवं अध्यक्ष द्वारा प्रदान कयल जायत।

आधुनिक मैथिलीक साहित्य परिचर्चा

श्रीमणिमधुसूदन तथा श्रीघनचक्र, एच/६१, सेक्टर—६, राउरकेला-२ (उड़ीसा) "आधुनिक मैथिलीकथासाहित्य परिचर्चा" आयोजित कए रहल छथि।

तुलसीदास, कमलानेहरूपुस्तकालयमे

लहेरियासराय. २९ जुलाइ। कमलानेहरू स्मारक नगरपालिका पुस्तकालय दिससँ तुलसी जयन्ती समारोह आचार्य श्रीप्रभाकरमिश्र, उपकुलपति, श्रीकामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविश्वविद्यालयक अध्यक्षतामे मनाओल गेल। हुनक सारगर्भित ओ सहज विचार, अद्भुत वक्तृत्व-क्षमता, तुलसीमे तल्लीनतासँ प्रभावितभए उपस्थित प्रबुद्धश्रोतागण स्वयं तुलसीसँ जेना आत्म-साक्षातकार कयलनि।

(आगाँ पृष्ठ २६२ पर)

शब्द-साधना

पारिभाषिक शब्द
लौकिक शब्द
लुप्त शब्द

शिक्षा

M.A. = कला-मह ॥ B.Sc. = विज्ञान-विद् ॥ I.Com. = सार्थ-प्रभ = Master [illegible] = अधिस्नातक उपाधि ॥ Bachelor Degree = स्नातक उपाधि ॥ [illegible] aduate = स्नातक ॥ Post-Graduate = स्नातकोत्तर ॥ Intermediate = [illegible] माध्यमिक ॥ Secondary = माध्यमिक ॥ Higher Secondary = उच्च [illegible] प्राथमिक ॥ आठम-नवमवर्ग = निम्नमाध्यमिक ॥ Middle = उच्चप्राथमिक, [illegible] य ॥ Upper = प्राथमिक ॥ Lower = निम्नप्राथमिक ॥ Matric = प्रवेशिका ॥ School = विद्यालय, चटिसार, पाठशाला ॥ College = महाविद्यालय ॥ University = विश्वविद्यालय, विश्वविद्यापीठ ॥ Ph.D. = शास्त्र-रत्न ॥ D.Phil = सिद्धांत-रश्मि ॥ D.Litt. = साहित्य-रश्मि ॥ D.Sc. = विज्ञानरश्मि ॥ D.Com. = सार्थ-रश्मि ॥ Doctor of Literature = साहित्य-महाश्री ॥ Research Institute = शोधसंस्थान, गुरुकुल, शोधपीठ ॥ Research Scholar = शोधप्रज्ञ, पढुआ ॥ Guide = गुरु, दिग्दर्शक ॥ Principal = प्राचार्य ॥ Professor = प्राध्यापक, आचार्य ॥ Lecturer = व्याख्याता ॥ Reader = प्रवाचक ॥ Dean = डीन, संकायाध्यक्ष ॥ Ragistrar = कुलसचिव ॥ Vice-Chancellor = उपकुलपति ॥ Teacher = शिक्षक, माह्टर ॥ Headmaster = प्रधानाध्यापक ॥ Class-teacher = वर्गशिक्षक ॥ Teaching = शिक्षण, पढ़ाइ, पढ़ौनी ॥ Training = प्रशिक्षण ॥ Student = छात्र, विद्यार्थी, चटिया ॥ Educationist = शिक्षार्थी ॥ Convocation = दीक्षांतसमारोह ॥ Diploma examination = सनद परीक्षा ॥ Certificate Course = प्रवेशपाठ ॥ Appreciation course = परिचय-पाठ ॥ Certificate = प्रमाणपत्र ॥ Lesson = पाठ ॥ Course = पाठ्यक्रम ॥ [illegible]

(बाकी पृष्ठ [illegible] पर)

कथा

जीवित छाया

श्रीभुवनेश्वरपाथेय

गर्मी !

जेठ मासक गर्मी !! धरती गरम-गरम साँस छोड़ैत छल। मनुक्ख गरमसँ अकुलायल छल। हावा कखिनो विहुंसैत छल आ' कखिनो [illegible] छल। धरतीक दृश्य रसे-रसे जरि गेल छल। चारूकात उदास ....उ[illegible] छल।

पिपरक गाछक छाया, चारूकात पसरल छल। गरमसँ मोन [illegible] छल। जँ गरम हावा देहसँ स्पर्श करै' छल तँ बुझाइत छल 'करेन्ट' लागि गेल होय। किछु सोचैत छलहुँ आर छाहरिमे बैसल-बैसल चलैत लोककेँ देखैत छलहुँ। एकटा साथियो बैसल छल। परंच एकाएक मुंहसँ आवाज निकलि गेलै'— आज के हो ? यति मानिस किन ??—थोड़ेक कालधरि हमर साथी चूप-चाप लोककेँ देखैत रहल आर हमहूँ देखैत रहलहुँ।

आज जेठ पुर्णिमा हो—साथीक आवाज छल। हम चकित भऽ गेलहुँ। आकाशमे रवि चमकि रहल छल। आ' धरतीपर गरम आगि पसरल छल। तेँ बजार जयबाक मोन नहि भेल। किछु समय बाद ... गर्मी कम भेल। धरती शान्त भऽ गेल। आर मनुक्खक जोश बढ़लैक तब घुमबाक लेल बजार गेलहुँ। जनकपुरक छोट बजार [illegible]

नया बस्तु किछु नहि छल। बच्चासभक खेलौना बिकाइत छल। घुमैत-घुमैत पयर थाकि गेल। बैसवाक मोन भेल परंच 'वीरेन्द्र पार्क' छोड़ि आर कोनो जगह नहि छल। तेँ पार्कमे गेलहुँ।

रंग-विरंगक सुन्दर फूलसँ पार्क विहुँसैत छल। सुगन्ध मनुक्खकेँ मोहने छल तेँ लोकसभ सभकिछु बिसरिकै फूलक गुच्छा देखैत छल। हावा फूलक

इन्डिया 'केफे'मे नाचू हे पृथ्वी

श्रीवीरेन्द्रमल्लिक

आइ महिनाक पहिल तारीख छल। महिना भरिक थकनी, दूधवलाक तगेदा, मकान मालिकक धमकी, धोबीक हिसाब, बच्चाक स्कूल फीस, पत्नीक फरमाइश—एहिसभसँ मोन कने कालकहेतु विश्राम लेबऽ चाहैत छल, कने हल्लुक होमऽ चाहैत छल। तैं आइ हम कीर्त्तिकेँ फोन कएल, गुणनाथझाजीकेँ फोन कएल आओर दूनूसँ आइ सन्ध्या सात बजे 'इन्डिया केफे' मे पहुँचबा वचन लेल। एहि जुटानक कारण की, एहिसँ दूनूकेँ अनभिज्ञ राखल, एवं 'सस्पेंस' अनेरे 'क्रिएट' भऽ गेल छल।

दूतल्ला-बसपर चढ़ल, एहि महानगरक भाग-दौड़, एतुक्का अ[illegible] आओर अर्थहीन हो-हल्ला, सड़कपर साँपजकाँ ससरैत बस, ट्राम, टैक्सी अ[illegible] कारक समूह, नारा लगबैत जुलूस आओर असंख्य-असंख्य मनुक्खक भीड़मे अपनाकेँ एकसर पाबि मोन औनाए लागल छल। हम सोचए लागल छलहुँ जे आइ कोना ई शहरी जीवन मनुक्खकेँ मिशीन बनाकऽ राखि देलकैक अछि—शुष्क आओर भावहीन। हम ई गप्पसभ सोचिते छलहुँ की बस एक झटकाक संग रुकि गेल। हम शीघ्रहि धक्कम-धुक्की करैत, बससँ नीचा उतरि गेलहुँ। हमर पयर अनायासहि 'इन्डिया केफे' दिस बढ़ए लागल छल।

'केफे' मे आइ बड़ रमकी छलैक। आइ लोकक अपार भीड़ आओर एक[illegible]-एक नब चेहरा! हम प्रसन्न भए विशेष कक्षक 'कॉजी कार्नर' मे जा कए बैस गेलहुँ। घड़ीमे देखल, एखन साढ़े छः[illegible] बाजल छल। माने मित्र सभकेँ अएबामे आध घंटाक विलम्ब। तैं हम तत्काल बेयरासँ कहि, एक बोतल 'गोल्डन इगल' मंगबाए, कने आस्वस्थ भेलहुँ। पुनः मैथिलीक एक गोट अत्यन्त परिचित हस्ताक्षर जीवकान्तक सद्यः प्रकाशित काव्य-पुस्तक 'नाचू हे पृथ्वी' केँ खोलि उनटाबए-पुनटाबए लगलहुँ। पुस्तक पूर्वहि पढ़ि गेल छलहुँ, तैं विशेष कवितासभकेँ बिखिया-बिखियाकऽ चिन्हित करए लगलहुँ। कनेकाल

थम्हि, बीचमे एक बेर मुड़ी उठाकऽ हॉलदिस तकलहुं, तऽ ओतए पीबऽवला सभक करमान लागल छलैक। हम 'चार मीनारक' पैकेटसं एकटा सिगरेट निकालिकऽ लेसलहुं आओर एकटा पैघ दम लगाकऽ धुआंक छल्ला उड़एबाक लेल उद्यत भेले छलहुं की देखैत जी, सामने कीर्त्ति ठाढ़ छल। हम ओकरा संकेतसँ कुर्सीपर बैसबाकलेल कहैत छियैक आओर संगहि बेयरासं ओकरालेल, 'थ्री एक्स रम' अनबाक आर्डर दऽ दैत छियैक।

कीर्त्ति टेबुलपर राखल 'नाचू हे पृथ्वी' कें देखि बाजि उठैत अछि—भाएहि! ई की? शराबक टेबुलपर 'नाचू हे पृथ्वी?'

हम र हम कहैत छियैक, 'आहि, से नइ बुझलह? यैह तऽ मैथिलीक मध हमरताक प्रतिमान थीक। प्राचीन परम्परा, कलामान, मूल्य आओर धुरीहीनता हम भागि जिजीविषा, मूल्यहीनता आओर जीवनक अर्थहीनतासँ निरन्तर संघर्ष भ्रत नव जमीनक तलाशमे संलग्न आजुक ई युवा पीढ़ी पूर्वापर कविसं भाव, वोध, निवृत्ति आओर रचना-धर्मिताक स्तरपर बहुत आगाँ बढ़ि गेल अछि। मुदा आइयो किछुलोक एहन छथि. जे द्राक्षासवक बोतलमे शराब ढारिकऽ पीबि तऽ लैत छथि मुदा लोकक सोझामे वा कोनो 'बार' मे एकरा ग्रहण करबामे लाज लगैत छनि। ओ संस्कारगत संकुचनकें तोड़लोसन्ता ओकरासँ आवद्ध छथि।' हम अपना बातकें समाप्तो नइं कएने छलहुं की कीर्त्ति एक साँसमे सौंसे गिलासकें अगस्तजकाँ सोखैत बाजि उठल—'तऽ तोहर संकेत जीवकान्त दिस छह की?' 'निश्चय हम जबाब देलियैक। जीवकान्तक कविमे एक दिस जतए अपना लौह-पयरपर अटूट विश्वास छनि, हुनकामे जतए आकाशकें मुक्त करबाकलेल दुर्दमनीय इच्छा-शक्ति छनि, ओत्तहि हुनकामे एकटा [illegible]कनी आओर सिंहासन तंत्रक दमन-[illegible]क्रसं प्राप्त निराशा सेहो परिलक्षित होइछ। हम अपना गप्पकें समाप्त करैत जहन गिलासकें खाली केलहुँ कि देखैत छी गुणनाथजी कीर्त्तिलग बैसल हमरादिस खौंझाएल ताकि रहलाह अछि। हम पुछलियनि—'की यौ, हमर गप्प सुनैत छलियैक की?' ओ चोट्टहि बजलाह 'हँ, सुनैत छलहुँ। 'नाचू हे पृथ्वी' क प्रति अपनेक धारणा सुनल; मुदा हमरा तऽ जीवकान्तमे अदम्य शक्ति, अपना पयरपर अटूट विश्वास आ मुक्तिकलेल संघर्षक

उद्घोष सुनाइ पड़ैत अछि। उदाहरण द्रष्टव्य अछि—

'हमर पयरे पर्याप्त अछि
लऽ जाउ अपन रक्तश्लथ अश्व
एहि दमदुट्टू वाहनपर हम अपन आसन नहि राखब
ओ आब नहि उठा सकत हमर भार'

आब बातमे कनो सरगर्मी आबि गेल छलैक। हम प्रतिपक्षक प्रतिपक्ष मे बजल्हुँ—'एतबा तऽ हमहूँ मानैत छी, मुदा राजनीतिक शतरंज-चालिसँ पूर्ण अवगत जीवकान्त सिंहासन-तन्त्रमे ओझड़ा कऽ निराश सेहो भऽ जाइत छथि। आजुक एहि विज्ञानयुगमे कथी असंभव छैक? 'If winter comes, spring be far behind?' एखन राति छैक तऽ काल्हि लाल सूरूज उग करतैक। मुदा ई निराशा किएक? ओ लिखैत छथि—

सिंहासन मोम नहि होयत
ओकरा कोनो धाह नहि गलाओत
इस्पाती सिंहासन ओहिना अछि, ओहिना रहत

एकदिस कविकेँ सिंहासनक परिवर्तनक कोनो संभावना नइँ बुझाइत छनि, ओत्तहि 'संविधान भऽ गेल अछि बुढ़बा सभक धौरबी। आ चोरबा सभक भाउज' कहि ओ लड़वाकलेल व्यवस्थानुरूप अपनाकेँ गढ़बाक मार्ग सेहो देखवैत छथि—

जंगलमे चलब तखने संभव अछि
जे जंगल भऽ जाइ।

× × ×

जंगल जंगले थीक।
जंगलमे चलबाकाल आवश्यक जे देहपर जंगल जनमा ली

हमर कथाकेँ स्वीकार करैत कीर्त्ति बाजि उठैत अछि—'ई गप्प तों ठीक कहलह, जीवकान्तक कविमे इएह अन्तर्विरोध हमरा शुरूसँ परिलक्षित होइत आएल अछि। आजुक दुःख आओर संत्रासक मार्गकेँ पार करैत ओ राजनीतिक अखाड़ातक तऽ पहुँचैति छथि, मुदा क्रूर वर्त्तमानक चौबटियापर

अधिकऽ जेना चोन्हरा जाइत छथि। ओ नाङ्गट होमए तऽ चाहैत छथि, मुदा कोरमे गमछा लेपटाएब नई बिसरैत छथि। बरोक माए, कनियोक माए-हुन। चित लाल, पट लाल—ई कहियाधरि। इएह जीवकान्तक कविताक सभसँ पैघ बिडम्बना—एकरा एना कहि सकैत छह—

"When he is good,
He is very very good.
When he is bad,
He is horrid."

'वाह! तौं तऽ हमरा मुँहक गप्प छीनि लेलह। आइ तोहर वकील-किछु काज देलकह।' —हम कीर्तिक गप्पकेँ खटमिट्ठीजकाँ चटैत छी। ओ पुनः बाजल—यैह कारण थीक जे कविक चेतना युगधारासँ कटि रहलोसन्ता पलायनक विन्दुपर जाकए थमकि जाइत अछि। यैह कारण ओ मोहभंगक स्थितितक पहुँचियोकऽ अपनहि सीमामे पुनः आवद्ध भऽ गेल अछि—

'थाकि गेल छी हे मित्र
बहुत रास बाट टपलहुँ
बहुत गिरिश्रृंगकेँ नपलहुँ
मुदा अपन सीमामे एखनो बद्ध
संकुचित छी'

कीर्त्ति अपन गिलासकेँ घटकैत पाँचम पेगक आर्डर दैत अछि। हम आन-आन टेबुलदिस अपन नजरि दौड़बैत छी। सभ टेबुल भरल अछि। एकान्त कक्षक शांति सेहो आब भंगभऽ गेल अछि। चारूदिस एकटा शोर, हो-हल्ला—इन्दिरा गाँधीसँ लऽ कए बंगला-देश आ फेर फाटका रेससँ लऽ कए अमेरिकन ब्राह्मण-ब्राह्मणीक राधा-कृष्ण-संकीर्त्तनधरि गप्प चलि रहल अछि। एतेक कालसँ चुप्प झाजी पुनः सगबगाइत छथि। ओ हमर धेयान अपनादिस आकृष्ट करैत बजैत छथि—'अपने सभ जे एखनधरि कहल से निश्चितरूपें एकटा विचार-भूमि तैयार करैत अछि। आर जे किछु होओ, जीवकान्तक

कवितामे हमरा स्वस्थ व्यंग्य आ प्राचीन मूल्य, सड़ल-गेन्हाइत परम्पराक प्रति आक्रामक स्वर स्पष्टतः सुनाइ दैत अछि। एहि कविता संग्रहमे ओ एहि समाज क प्रतिएँ, काछुक खपलोइयामे मुड़ी सुटकौने मैथिलक प्रतिएँ, बूढ़आस्थासँ सट्टल, सिमसिमाएल वर्ग-विशेषक प्रतिएँ एकटा निर्धोख प्रहरीक रूपमे 'आपात काल' घोषित कएलनि अछि—

खबरदार !
औ बूढ़ !! दूनू हाथ उठाउ।
फटाक !!!

'से हम मानल'—हम झाजीक गप्पक सूत्र पकड़ैत कहैत छियैक हम ई हो मानैत छी जे कवि स्वाधीनतासँ प्राप्त झूठ, मिथ्या भाष अकर्मण्यता, दरिद्रता, विदेशसँ प्राप्त भिक्षा, राजनीतिक गत्यात्मक क्रू नेताक फूसि आश्वासन, डालमियाँ—निकालमियाँक नाटक आओर एकचारीक देखैत बौधूकेँ पथड़ागेल आँखिकेँ देखि क्रोधित भेल अछि, कछमछाएल आ खौंझाएल अछि। मुदा ई कछमछी आ खौंझाहटि तखने सार्थक जौं एकर किछु प्रत्यक्ष परिणाम निकले। खलिया वन्दूकसँ आंब के डेराइत अछि ? जे युग वमकेँ गेन्द बना खेलि रहल अछि, ओकरापर एकर की प्रभाव ? ओहि विद्रोहक कोन प्रभाव जौं ओ कोनो निश्चित स्ट्रैटेजी' सँ संचलित नइँ हो ? तैं फ्रैंकलिन क्लैफ (Franklin Klaf) एक ठाम लिखने छथि जे मनुक्ख जहन कोनो वस्तुकेँ बुझबामे अपनाकेँ असमर्थ पबैत अछ, तऽ ओ विरोधक मुद्रा धारण कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि—'Man seeks to condemn what he fails to understand.'

कीर्त्ति देवालघड़ीदिस तकैत अछि। दस बाजि गेल छैक। लोक हो पतरा गेलैक अछि। दम विल चुकबैत छी आ बेयराकेँ एकटा 'टिप' दैत छयैक। पुनः 'नाचू हे पृथ्वी' केँ बैगमे बन्द कऽ हमरा लोकनि 'केफे' सँ बाहर भऽ जाइत छी।

---

* चर्चित पुस्तक : नाचू हे पृथ्वी : जीवकान्त : मूल्य एकटाका

(पृष्ठ २६४केर बाँचल)

tion अनुशिक्षण ॥ Tuition = उपशिक्षण, खानगी-पढ़ौनी ॥ Tutorial class = अवबोधिकक्षा ॥ Education = शिक्षा ॥ Knowledge = ज्ञान ॥ Learning = विद्या ॥ Demonstration = निदर्शन ॥ Admit-card = प्रवेशपत्र ॥ School leaving Certificate = विद्यालयसमावर्त्तनप्रमाणपत्र, पाठशाला परित्याग प्रमाणपत्र ॥ Transfer = स्थानान्तरण ॥ Session = सत्र ॥ Engineering = अभियत्रणा ॥ Technical = तकनीकी ॥ Mechanical = मशीनी, यांत्रिकी ॥ Civil = असैन्य, नागर ॥ Acedamy = अकादमी ॥ Institution = संस्था ॥ Attendance Register = हाजरीवही, उपस्थिति-पुस्तिका ॥ Art = कला ॥ Arts = कलाविषयक ॥ Survey = सर्वेक्षण ॥ Admission = प्रवेश ॥ Scholarship = छात्रवृत्ति ॥ Grant = अनुदान ॥ Aid = सहायता ॥ Visual aid = दृश्यसाधन ॥ Board = मंडल ॥ Committee = समिति ॥ Council = परिषद् ॥ Federation = महासंघ ॥ Association = संघ ॥ Library = पुस्तकालय ॥ Librarian = ग्रन्थपाल ॥ Seminar = परिगोष्ठी ॥ Club = क्लब, गोष्ठी ॥ Diary = दैनिकी ॥ Curriculum = परिचर्या ॥ Directrr = निदेशक ॥ Debate = वादविवाद ॥ Audio-Visual = दृश्यश्रव्य, रूपवाणी ॥ Adolescent = किशोर ॥ Adult = प्रौढ़, वयस्क ॥ Basic = बुनियादी ॥ Culture = संस्कृति ॥ Moral = नैतिक ॥ Policy = नीति ॥ Faculty = संकाय ॥ Maximum Marks = उच्चतम अङ्क ॥ Minimum Marks = निम्नतम अंक ॥ Method = प्रणाली, पद्धति ॥ Discussion = चर्चा ॥ Kindergarten = शिशुविहार ॥ Hostel = छात्रावास ॥ Record = अभिलेख ॥ Pupil = शिष्य ॥ Progress-report = प्रगति निवेदन ॥ Charity School = धर्मार्थ विद्यालय ॥ Subject = विषय ॥ Compulsory = अनिवार्य ॥ Elective = वैकल्पिक ॥ Optional = ऐच्छिक ॥ Syllebus = पाठ्यविवरण ॥ Retired teacher = निवृत्त शिक्षक ॥ Leave = छुट्टी ॥ Vacation = अवकाश ॥ Extra Curricular Activities = बाह्यकार्यकलाप ॥ Directory = निर्देशिका ॥ Form = प्रपत्र ॥

—श्रीशंकरसोम

Regd. N0. P—714 Vaidehi August 71 R. N. 3731/57 (Govt of India)

मैथिली-संस्थाक परिचय-पात

श्रीमन्महोदय

मैथिलीक अभ्युत्थानमे छोट- पैघ क्षणिक ओ दीर्घजीवी अनेकानेक संस्थाक जे योगदान होइत आएल अछि से मिथिलाक इतिहासमे अवश्य स्मरणीय थीक। अतः एहन संस्था-सभक स्मृति-रक्षार्थ ई संस्था निर्णय कएलक अछि जे मैथिलीक अभ्युत्थानमे योगदान कएनिहार सकल संस्थाक परिचय-पात प्रकाशित कएल जाए। परन्तु ई काज अपने लोकनिक सहयोग बिनु सम्पन्न नहि भए सकैत अछि, अतः अपने लोकनिसँ प्रार्थना जे अपने जाहि कोनो संस्थाक सम्पर्कमे आएल होइ तकरा प्रसङ्गमे निम्न-लिखित परिचय पठएबाक कृपा कएल जाय।

१. नाम २. स्थापना काल ३. जीवन काल ओ संक्षिप्त इतिहास ४. किछु प्रमुख संस्थापक लोकनिक नाम ओ पता ५. वर्त्तमान अध्यक्ष, मन्त्री आदि पदाधिकारीक नाम ओ पता। ६. कार्यक्षेत्र ७. उद्देश्य ८. उल्लेखनीय कृति ओ कार्य ९. वर्त्तमान पता १०. आय-साधन, विशिष्ट दाता वा पोषक लोकनिक नाम ओ पता ११. यदि टूटि गेल हो तँ टुटवाक मुख्य कारण १२. कोनो आन उल्लेखनीय विषय।

पुनश्च—(१) एकसँ अधिक संस्थासँ जँ सम्बद्ध होइ तँ पृथक्-पृथक् सवहिक सूचना पठावी।

(२) जतेक नीक नीक चित्रावली एहि प्रसंग पठाबी से उत्तम हैत। वर्त्तमान एवं पूर्ण पदाधिकारी वर्गक, समिति, सभापति, मन्त्री आदिक चित्र, कोनो अधिवेशन वा विशिष्ट अवसरक चित्रावली सेहो रहै। चित्र सभ बड़ स्पष्ट ब्लाक योग्य रहै।

भवदीय

श्रीकृष्णकान्तमिश्र, मन्त्री

वैदेही समिति एवं अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलन, दरभंगा